आदिवासी अधिकार और सुधार आंदोलन

स्टेनली ऐं भाणात

सामाजिक आन्दोलन का सम्बन्ध समाज की व्यवस्था में परिवर्तन से है । सामाजिक परिवर्तन केवल सामाजिक आन्दोलन से नहीं होता, लेकिन सामाजिक परिवर्तन अनेक कारणों से होता है। जैसे औद्योगिकरण, नगरीकरण, संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण। सामान्यतः सामाजिक व्यवस्था को दो तरह की परिस्थितियाँ प्रभावित करती है (१) बाहय और (२) आंतरिक । बाह्य परिस्थिति बाह्य परिबळो से प्रभावित होती है और आंतरिक परिस्थिति आंतरिक परिबळो से प्रभावित होती है जिस में समाज के सदस्य स्वयं परिवर्तन लाते है। इस संदर्भ में लेविस किलियन ने कहाँ है की सामाजिक आन्दोलन का कोई भी अध्ययन हमे उस तथ्य का स्मरण दिलाता है जिस के अन्तर्गत मनुष्य में बहन दबनेवाली भावना तथा धारणा है। जिस के अनुसार उन्हें विश्वास है कि व अगर अकेले नहीं तो सामूहिक रूप से अपने ही प्रयत्नों घ्वारा संस्कृति और समाज में व्यापक परिवर्तन ला सकता है ।

स्वातंत्र्य पूर्व और पश्चात् भारत में कई प्रकार के आन्दोलन होते आ रहे है। जैसे आदिवासी आन्दोलन, राष्ट्रीय आन्दोलन, कृषक आन्दोलन, पर्यावरणीय आन्दोलन, दलित आन्दोलन, स्त्री आन्दोलन आदि अपने अपने हितों के लिये आन्दोलन चला रहे थे। इस में से आदिवासियों का आन्दोलन और विद्रोह का इतिहास बहोत पूराना है। भारत में आदिवासी क्षेत्रों में अशान्ति और अलगाव की भावना वर्षों से जोर पकड रही थी। असम से लेकर आन्ध्र प्रदेश, गुजरान राजस्थान तक आन्दोलन और विद्रोह की स्थिति बनी रही थी। बोडो आन्दोलन की बगावत असम शासन के लिए मुश्किल बन गई थी। नागालेन्ड, मिजोरम और मणीपुर के अनेक गुट पूलिस और सेना की टुकडीओं पर हमला कर रहे थे। बिहार और उडीसा के आदिवासी अलग प्रदेश की मांग कर रहे थे। आन्ध प्रदेश में नक्सलवादी गतिविधियाँ वर्षों से चल रही है। आम तौर पर आदिवासियों के बारे में आम धारणा यह है कि वे अत्याचार, शोषण, जुल्म और छुअछुत की भावनाओं को चुपचाप बर्दास्त करते रहे है। फिर उनके बीच विद्रोह क्यों व्याप्त हुआ ? अलगाव कि प्रेरणा कहाँ से आई? तो इसका कारण है जि जागीरदार और शासक के घ्वारा उनकी आवश्यकताओं पर रोक लगा दी गई। उनको उनके अधिकारों से वंचित कर दिया गया। इन्ही मुख्य कारणों से आदिवासी क्षेत्र में संथाल, झारखंड, बोडो, तेलंगान, गोविंदगुरू जैसे आन्दोलन और विद्रोह हुए। ऐसा ही एक आन्दोलन गुजरात और राजस्थान के सरहदी क्षेत्र में हुआ था। जिसका नेतृत्व मोतीलाल तेजावत ने किया था ।

आदिवासी आन्दोलन के अधिकार

सन् १९२१-२२ में गुजरात और राजस्थान के सरहदी प्रदेश में आदिवासी आन्दोलन हुआ था, ये आन्दोलन जागीरदारी और अंग्रेज के खिलाफ था। मोतीलाल तेजावत एक बिनआदिवासी व्यक्ति थे वो उदयपुर जिले के झाडोल के पास कोलीयारी गाँव के रहनेवाले थे ।वो झाडोल कें जागीरदार के पास ठेकेदार का काम करते थे । लेफित वे अधिक समय तक ठेकेदार का काम नहीं कर सके । उसका कारण झाडोल के राव शराबी थे और बेगार और कर मनमानी से वसूल करता था। तेजावत से भी २०० रूपिया देने को कहाँ, लेकिन उसने मना करने पर उनको कैद कर दिया गया। इस प्रकार के अत्याचार से इन क्षेत्रों में रहनेवालें आदिवासी लोग भी शिकार थे। इसी समय में राजस्थान में सामन्ती शोषण एवं उत्पीडन के विरूध्ध किसानों के असंतोष की आग भडक रही थी। इस क्षेत्र में किसान आन्दोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया था। किसानों ने राज्य एवं जागीरदारी प्रशासन का बहिष्कार कर दिया था।

मोतीलाल तेजावत ने भी उस वक्त आदिवासी किसानो का नेतृत्व किया । उन्हें संगठित करने के लिए १९२१ में चितोडगढ जिले में मातृकुडीय तीर्थस्थान पर एक धार्मिक मेले का आयोजन किया था । इस मेले में लगभग एक लाख आदिवासी किसान एकत्रित हुए थे। तेजावत में इन किसानो के साथ लाग-बान बैठ बेगार तथा विभिन्न लागत व करो के विरूध्ध विचारविमर्श कर आन्दोलन करने का निश्चय किया और यह भी तय किया गया कि जबतक हम महाराजा मेवाड से मिलकर अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर पांते तब तक कोई लागत्त नहीं भरेगा। इस विचार को विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों में पहुंचाया गया जिससे इस क्षेत्र के आसपास के ईलाके के हजारों आदिवासी प्रभावित हुए और लोगों ने समर्थन दिया उसी के संदर्भ में तेजावत ने अत्याचार और शोषण सारी शिकायते लिपिबध्ध करके "मेवाड की पुकार" नामक एक पुस्तक तैयार की उसमें २१ मांगें महाराणा के सामने रखी गई । जिसमे से १८ मांगे स्विकार कर ली और शेष तीन मांगो को स्वीकार नहीं किया जो मुख्य थो ।

(१).. वन सम्पदा के उपयोग पर नियत्रण

(२) शिकार करने पर प्रतिबन्ध

(३) अनुचित कर एवं लागत

इन मांगो से लेकर ये आन्दोलन बहांत जल्द इस क्षेत्र में फैल गया था। उस समय बिजोलीया के किसानों में भी असंतोष फैला हुआ था। तेजावत ने उन लोगों को भी आन्दोलन करने की बात की। ये आन्दोलन इसे आदिवासी क्षेत्र में मेवाड के आसपास के क्षेत्र में फैलता हुआ फलासीया, अरसीगट, उदयपुर, पांडोली, केसरखेडी, खेमली, गासा, माकतला के लोग भी इस संगठन में जुड गये थे और उदयपुर में अपनी मांगों को लेकर एकत्रित हुए। उसके बाद तेजावत का संपर्क मादडीपट्टा, जवास, थाणा, पाडा, खेरवाडा सभी क्षेत्र में बढ गया था और लोग उसके समर्थन में आ गये थे। इसी के संदर्भ में ७ मार्च को ईडर स्टेट के दढवाव ठीकाने पर एक सभा आयोजित कि गई थी । जिसकी जानकारी पोलीटीकल एजन्ट से, मेवाड भील कोर्स को मिली और मेवाड भील कोर्ब्स की टुकडी वर्हा पहुँची और आदिवासी लोगों के साथ संघर्ष हुआ। जिसमें १२०० से अधिक आदिवासी, लोगों की मृत्यु हो गई। तेजावत वहाँ से भाग निकला। इस आन्दोलन के संदर्भ में अप्रेल १९२२ में सिरोही राज्य के रोहीडा, बाबोलीया और भूला नयावास में भी विद्रोह शुरू हो गया था। आदिवासी लोगों ने कर आर बेगार का संपूर्ण बहिष्कार कर दिया था। उस वक्त महात्मा गांधी की ओर से भी समाधान का प्रयास किया गया था। इस में गांधीजी का मानना था कि तेजावत ने आदिवासीओं को विद्रोह और हिंसक प्रवृत्ति करने प्रेरित नहीं करना चाहिए और उसको आत्म समर्पण कर देना चाहिए। लेकिन असंतोष इतना व्याप्त था कि उसका संगठन तेजी से बढ रहा था। जिसके संदर्भ में बाबोलीया और भूलां गाँव को मेवाड भील कोर्स घ्वारा आग लगा दी। जिनके कारण ५० जितने लोगों की मीत हुई और२ १५० जितने लोंग घायल हुए और उनकी अपनी संपत्ति नष्ट हो गई। इसकी नोध राजस्थान सेवा संघ, अजमे२ ९, १०. में १९२२ के समाचारपत्रों में प्रकाशित की गई थी।

प्रकाशचन्द्र जैन अपनी पुस्तक "सामाजिक आन्दोलन का समाजशास्त्र" में भूलां और बाबोलीया गाँव में हुई जन और धनहानी का विवरण में बताते है कि भूला गाँव में ११५० लोगों की मृत्यु हुई थी और बाबोलिया गाँव में ६५० लोगों कि मृत्यु हुई थी। कई परिवार, मकानों, अन्न, घास, पशुओं और अन्य क्षति हुई थी । इसके बाद आदिवासियों और सरकार के बीच समझौता हुआ था। जिसमें तय हुआ कि आदिवासियों के साथ सरकारी अधिकारीओं घ्वारा सन्मानपूर्वक व्यवहार किया जायेगा, लागत में छुट दी जायेगी। आदिवासियों के घर आदि निर्माणकार्य के लिए लकडी जंगल से दी जायेगी। कर बेठ नहीं करवाया जायेगा. आदिवासीओ परंपरागत पंचायत को पुनः अधिकार दिए जायेंगे। जिससे वे अपन आपसी झगडे सुलझा शके ।

ब्रीज किशोर शर्मा अपनी पुस्तक "ट्रायबल रीवोल्ट" में बताते है कि मोतीलाल तेजावत मेवाड क्षेत्र में आदिवासी लोगों को संगठीत करके जागीरदार और ब्रिटीश शासन के खिलाफ आन्दोलन चला रहे थे और यह आन्दोलन मेवाड क्षेत्र से विस्तरता हुआ ईडर स्टेट में फैल गया था। मार्च १९२२ जब तेजावत इंडर के पाल में अपने साथीओं के साथ ठहरे थे वहाँ मेवाड भील कोर्स घ्वारा इकठ्ठ हुए आदिवासियों पर गोलीबारी की और२ २२ लोगों की मोत हो गई और २९ लोग घायल हुए। उसके बाद दुसरी महत्वपूर्ण घटना सिरोही स्टेट में बनी ।

एम. एन. श्रीनिवास घ्वारा संपादित ग्रन्थ "इन्डीयन विलेज" में मोरीस कार्स्टस के लेख में भी बताया गया है कि मोतीलाल तेजावत घ्वारा कुछ सुधारावादी प्रवृत्ति हो रही थी। उसमें उन्हों ने मांस, शराब आदि चीजों से लोगों को दुर रहने को कहा था। विशेष में उन्हों ने बताया था कि लोगों को. जमीन पर लागु कर नहीं भरना चाहिए। ये जमीन के मालिक आप ही है। साथ में उन्होंने चमत्कारिक बातों से भी लोगों को संगठीत करने का प्रयत्न किया और इसी संदर्भमें इस क्षेत्र के पाल चितरिया गाँव में तेजावा की सभा आयोजित हुई थी। जिस सभा पर रोक लगाने के लिये मेवाड भील कोप्स की टुकडी वहाँ पर पहुँची और तेजावत की चमत्कारिक बातों के प्रभाव से आदिवासियोंने उसका सामना किया। इस में कई आदिवासी लोगों की मृत्यु हो गई। उसके बाद तेजावत लोगों को संगठीत नहीं कर सका ।

समापन

गुजरात और राजस्थान के सरहदी क्षेत्र में हुए मोतीलाल तेजावत का आन्दोलन मुख्य रूप से अत्याचार और शोषण के खिलाफ संगठीत हुआ था। ये आन्दोलन एक बिनआदिवासी नेता घ्वारा चलाया गया था । इसका कारण तेजावत भी इस व्यवस्था में अत्याचार का शिकार बने थे। उसने मेवाड के पुरा आदिवासी, क्षेत्र में संपर्क करके लोगों को बताया कि राजा, जागीरदार ओर शासक पक्ष हमारा शोषण कर रहे है। उसका हम बहिष्कार करेंगे और उस विरोध में समग्र क्षेत्र के लोग उसके समर्थन में आ गये थे, लेकिन इस आन्दोलन के संदर्भ में दो घटनाएँ हुई थी। जिस से ये आन्दोलन पूर्ण सफल नहीं हो पाया था । जिसमें (१) दढवाच हत्याकांड उस में १२०० से अधिक लोगों की मृत्यु हुई थी। (२) सीरोही हत्याकांड जिसमें भी भारी मात्रा में लोगों की मृत्यु हुई ।

मोतीलाल तेजावत नें लोगों को संगठीत करने के लिये धार्मिक आधार और चमत्कारिक नेतृत्व भी बनाया था। जिस से लोगों में धार्मिक विश्वास और : चमत्कारिक प्रभाव से आदिवासियोंने मेवाड भील कोर्स का सामना किया था । जिससे भारी मात्रा में जानहानि हुई। इस आन्दोलन के विरोध के परिणाम स्वरूप जागीरदार और सरकार घ्वारा आदिवासियों की मांगों में कुछ समझोता किया ।

मोतीलाल तेजावत नें इस आन्दोलन को राजकीय स्वरूप से संगठीत किया था लेकिन धार्मिक ओर सामाजिक प्रभाव में भी वे आ गये थे। उसने सामाजिक सुधार प्रवृत्ति की बात बताई। उसमें लोगों को अंधश्रध्धा और कुरिवाज से बहार निकलने की बात कही। मांस, दारू से लोगों को दुर रहने को कहा। इस आन्दोलन से इस क्षेत्र के आदिवासी लोगों में आर्थिक हितों के प्रति सभानता का प्रसार हुआ । अन्याय, अत्याचार के सामने लडने की भावना का संचार हुआ, सामाजिक धार्मिक सभानता का विकास हुआ था, और सामाजिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव आया था। फिर भी पूर्णरूप से ये आन्दोलन सफल नहीं हो पाया ।

1) sharma K.L (1986) " Caste Class and Social movement"
Rawat publication jaipur
2) Dave P.C. (1960) " The Grasi u"
Bharatiya Adimjati Seva Sangh, King Way Delhi
3) भारद्वाज (राकेश) (1966) "अंधेरे के साथी"
राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
૪) ગાંધીજી (૧૯૨૧-૨૨) ગાંધીજી નો અક્ષરદેહ
નવજીવન પ્રકાશ મંદીર અમદાવાદ – ૧૪
૫) સ્ટેન્લી એ.ભણાત (૨૦૦૪) " મોતીલાલ તેજાવત નુ આંદોલન"
સમાજશાસ્ત્ર ભવન સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી રાજકોટ